UNIT I → IV

1. → Life History of Bismillah Khan :→

वर्तमान युग में शहनाई वाद्य को लोकप्रिय बनाकर उसे उन्नति के शिखर पर पहुँचाने का श्रेय उक्त कलाकार को ही है। जिस-किसी के कानों में आपके श्रुति-मधुर शहनाई-वादन की स्वर-लहरियाँ पड़ जाती है। उसी का हृदय आपकी प्रतिभा को मान लेता है। श्रोताओं को स्वर के अथाह सागर में डुबो देने की क्षमता इसी कलाकार में देखी जाती है। समय-समय पर होने वाले विभिन्न संगीत-सम्मेलनों में सुरीला वातावरण बनाने के लिए सम्मेलनों का श्रीगणेश प्रायः "बिसमिल्लाह खाँ" के शहनाई-वादन से ही होता देखा जाता है।

खाँ साहब की वंश-परम्परा सुप्रसिद्ध शहनाई-वादकों से संबंधित है। आपके पूर्वज भोजपुर-दरबार में शहनाई-वादक रहे थे। आपके पिता का नाम "उस्ताद पैगम्बर बख्श" था, जो अपने युग के श्रेष्ठतम संगीतज्ञ रहे। भोजपुर में ही सन 1908 के लगभग बिसमिल्ला खाँ का जन्म हुआ। अभिभावकों के कठिन प्रयत्नों के बावजूद भी आप स्कूल से दूर भागते थे। छह वर्ष की आयु से ही इन्होंने अपने मामा "उस्ताद अलीबख्श" से शहनाई की तालीम लेना आरम्भ कर दिया। प्रतिभाशाली और परिश्रमी होने के कारण आप द्रुत गति से शहनाई-वादन पर अधिकार करने लगे। आपके मामा उच्चकोटी के शहनाई-वादक होने के साथ-साथ गायकी में भी कुशल थे अतः वे बिसमिल्लाह को साथ ले जाते। इस प्रकार अल्पायु में ही संगीत-

Scanned with CamScanner

सम्मेलनों में सक्रिय भाग लेने से आपको निरन्तर शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से आप लखनऊ गए और वहाँ "उस्ताद मुहम्मद खाँ" से प्रयाप्त शिक्षा प्राप्त की।

निरंतर श्रम और अविरल प्रयत्न करनेवालों के समक्ष सफलता हाथ बांधे खड़ी रहती है। अत: 17-18 वर्ष की आयु में ही कुशल कलाकार बन गए। आपकी ख्याति का प्रारम्भ सर्वप्रथम प्रयाग संगीत विद्यालय के संगीत-समारोह में हुआ यह समारोह सन् 1936 ई० में हुआ था। इस अवसर पर भारत के उच्चकोटि के संगीतज्ञ उपस्थित थे। "श्री बिस्मिल्लाह खाँ" ने अपने मधुर शहनाई-वादन से उपस्थित श्रोता-वर्ग को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रोताओं ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बहुत से पदक तथा प्रमाण पत्र आपको भेंट किए। तबसे आपको लगभग सभी उच्चस्तरीय संगीत-सम्मेलनों में निमंत्रण किया जाने लगा। जहाँ भी गए, श्रोताओं के हृदय-पटल पर अपनी मधुर स्मृतियाँ का चित्र अंकित कर आए।

आपके भाई शमसुद्दीन खाँ भी उच्चकोटि के शहनाई-वादक थे। संगीत-सम्मेलन में दोनों ही साथ-साथ जाया करते थे। दुर्भाग्यवश शमसुद्दीन खाँ का देहावसान हो गया। ऐसे कलाकार भ्राता की मृत्यु से बिस्मिल्लाह खाँ का हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया। आखिर विधि के विधान पर संतोष करना ही पड़ता है।

आप अपने शहनाई-वादन की संगीत के लिए तबले के मुकाबले में खुर्दक को अधिक पसन्द करते थे, क्योंकि तबले की आवाज़ अधिक देर तक गूँजने के कारण शहनाई के स्वरों में एक रस नहीं हो पाती और

खुर्दक की आवाज़ कम गुंजायमान होने के कारण उसमें मिल जाती है। आपका कहना है कि जिस युग में शहनाई का प्रादुर्भाव हुआ था उस समय तबले का निर्माण नहीं हुआ था। पूर्वजों ने शहनाई की संगति के लिए खुर्दक को ही उपयुक्त समझा।

खाँ साहब शहनाई वाद्य को अन्य वाद्यों के समान ही लोकप्रिय एवं समाज में प्रचलित करने के प्रयत्न में थे। आपकी आपने इसकी शिक्षा के निमित्त काशी में एक पाठशाला भी खोल रखी है। आपके शहनाई-वादन की अधिक प्रशंसा करने की आवश्यकता नहीं। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित होनेवाले आपके कार्यक्रम कितने आकर्षक और प्रभावशाली होते हैं, यह श्रोताओं से छिपा नहीं है। खाँ साहब यूरोपीय देशों में भी भ्रमण कर चुके हैं। वहाँ के लोगों ने कहा कि "यदि यह आदमी ज़िन्दा है तो यह निश्चय ही फ़रिश्ता है।" शहनाई के रिकार्ड आप हज़ारों की संख्या में भरवा चुके हैं। वादन-कला में आप सन् 1956 ई० में राष्ट्रपति द्वारा पदक प्राप्त करके सम्मानित हो चुके हैं। सन् 1968 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म-भूषण के अलंकरण से सम्मानित किया। भारत ऐसे कलाकारों पर गर्व कर सकता है।

2.

→ Man Singh Tumar :→

ग्वालियर के तोमर वंश का शासनकाल सौ वर्षों से भी अधिक रहा है। भारतीय संगीत की आत्मा पुनः प्रतिष्ठित करने में मानसिंह तोमर का विशेष सहयोग रहा है।

→ संगीतज्ञ के रूप में :→ ये अत्यन्त कला प्रेमी व कलाविद्या के पोषक थे। राजा मानसिंह (1485-1518 ई.) अति गुणी संगीत विद्वान थे तथा ग्वालियर घराने के प्रतिष्ठाता थे। ध्रुपद गान के पुनरुद्धारक व प्रचारक के रूप में भी वे सदा स्मरणीय रहेंगे। इनके दरबार में अनेक गायक व वादक थे, जिसमें नायक बैजू, नायक बक्शू, नायक चरजू तथा रामदास आदि उल्लेखनीय है। नायक बैजू जो अपने काल में एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे तथा मानसिंह तोमर के दरबारी गायक थे। बैजू ने ग्वालियर को संगीत का केन्द्र बना दिया था तथा नायक बक्शू ने भी इनसे संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी।

मानसिंह तोमर ने 'मानकुतूहल' ग्रन्थ की रचना की, जिसका फकीरुल्लाह ने फारसी भाषा में अनुवाद किया, जो तत्कालीन संगीत शैली पर प्रकाश डालता है। यह भी कहा जाता है कि सबसे पहले ध्रुपद का अविष्कार राजा मानसिंह ने किया था। संगीत चिन्तामणि ग्रन्थ में ब्रजभाषा के माध्यम से ध्रुपद को पुनर्जीवित करने का श्रेय भी मानसिंह तोमर को ही दिया गया है। विद्यापति की शैली पर ब्रज भाषा में कृष्ण लाल सम्बन्धी पदों का निर्माण भी मानसिंह तोमर के प्रयत्नों का परिणाम था, ये पद विष्णुपद कहे गए।

Scanned with CamScanner

मानसिंह तोमर संगीत के शास्त्रीय एवं क्रियात्मक पक्ष दोनों में पारंगत थे, मानसिंह तोमर ने अपने राज्य में संगीत शालाओं का निर्माण भी किया जहाँ संगीत के जिज्ञासु नियमित रूप से संगीत शिक्षा प्राप्त कर सके, साधारण गायक व रसिकों के लिए उन्होंने संगीत सम्बन्धी नियमों को लोक भाषा में संक्षिप्त रूप से निबद्ध किया।

→ मृत्यु :- मानसिंह तोमर की मृत्यु 1516 ई० में हुई। संगीत के क्षेत्र में मानसिंह तोमर के कार्य अतुलनीय है।

Scanned with CamScanner

5.

→ Pandit Bhimsen Joshi :-

→ जन्म :- भारतीय संगीत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखने योग्य एवं सांगीतिक कलाविधि को दीर्घकाल तक सफलतापूर्वक चलाने वाले लोकप्रिय गायक पण्डित भीमसेन जोशी का जन्म कर्नाटक में धारवाड़ा ज़िले के गदग 14 फरवरी, 1922 को हुआ था। उनके पिता पण्डित गुरुराज आचार्य और कौशल शिक्षक थे। चाचा पण्डित गोविन्दाचार्य कन्नड़ के प्रख्यात लेखक थे और दादा भीमाचार्य भक्त पुराण के गायक के रूप में लोकप्रिय थे। माता श्रीमती गोदावरी बाई आस्ति- वृत्ति की महिला थी और कन्नड़ भजन गाया करती थी। माता ने अनुभव किया कि भीमसेन के रूप में श्वसुर भीमाचार्य जी ने पुनः जन्म लिया है। इसलिए बालक का यह नामकरण किया गया।

→ शिक्षा :- गायन में भीमसेन की रुची अपनी माता के कारण ही उत्पन्न हुई। सात वर्ष की आयु में ही उनका संगीत - प्रेम तीव्र हो गया। पिता ने संगीत- शिक्षा की व्यवस्था कर दी। शिक्षक चिन्नप्पा कुर्तकोटी नाम के धोबी थे। गाना वे ठीक ही सिखाते थे किन्तु गाँव की एक दुकान पर बजने वाले उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के रिकार्ड (राग बसन्त में 'फगवा ब्रज' और ठुमरी, 'पिया बिना') ने भीमसेन के कोमल मन को अत्यधिक प्रभावित किया।

घर से पलायन की प्रवृत्ति परिवार में थी और बालक भीमसेन में इस प्रवृति को जागृत होना स्वभाविक था। अतः वह भी भाग निकले बिना टिकट के ही ट्रेन यात्रा की। रास्ते में अभंगों और भजनों से रेलकर्मियों को रिझाते रहे। बम्बई पहुंचे तथा ग्वालियर गए, ताकि

Scanned with CamScanner

उन्हें वहाँ गायन सीखने को मिल सके।
ग्वालियर में इनकी किसी कीर्तनकार से भेंट हुई। कीर्तनकार के सहयोग से ग्वालियर के महाराजा के यहाँ भोजन की व्यवस्था हो गई। ग्वालियर में जहाँ कहीं भी इन्हें संगीत सीखने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने संगीत सीखा। यहाँ से आगे बढ़ते बढ़ते बालक भीमसेन जालन्धर पहुँचे। वहाँ हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन में बड़े-बड़े उस्तादों को सुनकर वे रोमांचित हो उठे। महाराष्ट्र से आए विद्वान् गायकों में पण्डित विनायक राव पटवर्द्धन भी जालन्धर आए थे। पण्डित विनायक राव पटवर्द्धन इस समय कीर्ति शिखर पर थे।

इन्होंने बालक भीमसेन की रोमांचकारक कहानी सुन ली थी। बालक का गायन सुनकर उन्होंने किराना घराने के गायक सवाई गन्धर्व के पास जाने की सलाह दी। सवाई गान्धर्व भीमसेन के जन्मस्थल के निकट मारवाड़ में रहते थे। उन्हें वर्ष 1932 में अपने गाँव में आयोजित जलसे का स्मरण हो आया, जिसमें सवाई गन्धर्व का गायन हुआ था। इनके अन्तर्मन में इनसे गाना सीखने की इच्छा महसूस हुई। भीमसेन के पिता के चाचा के माध्यम से पण्डित रामभाऊ कुन्दगोलकर सवाई गन्धर्व से शिक्षा आरम्भ हुई।

भीमसेन की प्रारम्भ में लगभग 8 वर्ष तक प्रत्यक्ष तालीम की शुरुआत नहीं की गई, अपितु उन्हें गायन सुनने की मात्र आदत डाली गई। इसके बाद इनकी शिक्षा शुरू हुई। पण्डित सवाई गान्धर्व की शिक्षा देने की अपनी पद्धति थी। पहले वे गला तैयार करवाते। पाँच वर्ष तक कठोर शिक्षा व साधना में भीमसेन का समय निकला।

तत्पश्चात् एक व्यवस्थित तालिम आपको प्राप्त हुई। उनके दैनिक साधना में प्रातः चार बजे खरज भरना फिर छः-सात बजे तक मन्द्र सप्तक नौ से बारह बजे तक तीन से छः बजे तक और रात को दस से बारह बजे तक रियाज। ख्याल किस प्रकार गाया जाए, बढ़त किस प्रकार

Scanned with CamScanner

हो तान की फिरत किस प्रकार प्रभावपूर्ण होगी, विलम्बित लय में प्रस्तुतीकरण कैसा हो आदि बातों पर विशेष ध्यान दिया गया। पिता ने एक तबला वादक तथा हारमोनियम वादक की घर पर ही व्यवस्था कर दी।

किराना घराना के वरिष्ठ गायक एवं श्रुति-मधुर कण्ठ और वजनदार आवाज के धनी पण्डित भीमसेन जोशी के गायन में अन्तर्देशीय, मननशील व्यक्ति का स्पर्श है। उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और सवाई गन्धर्व की परम्परा का निर्वाह करते हुए, उन्होंने एक नया महल खड़ा किया है। राग को जीवन्तता प्रदान करने में उनका कौशल अद्भुत है और नए युग की धारा के अनुरूप उनका कलापूर्ण सृजन अनूठा है। यह उनकी प्रतिभा और बुद्धि कौशल का चमत्कार है।

पण्डित भीमसेन के गायन-कार्यक्रमों का आरम्भ छोटी घरेलु बैठकों से हुआ और उन्हें रसिक-समाज से पूरा समर्थन मिला। देश के कोने-कोने में आयोजित अनेक संगीत परिषदों में सदैव भाग लेते रहे हैं। आकाशवाणी संगीत सम्मेलनों से भी उन्हें प्रसिद्धि मिली वर्ष 1964 से उन्होंने विभिन्न देशों की यात्रा की। विदेशियों ने उनके संगीत को बेहद पसन्द किया। वे प्रतिवर्ष पुणे में सवाई गन्धर्व संगीत समारोह का आयोजन करते हैं, जिससे उन्हें कुशल आयोजक के रूप में भी ख्याति प्राप्त हुई है।

→ सम्मान :- कई मान सम्मान एवं उपाधियों से विभूषित पण्डित भीमसेन जोशी को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1972 में पद्मश्री अलंकरण प्रदान किया गया, वर्ष 1975 में संगीत नाटक अकादमी तत्पश्चात आपको पद्मभूषण पद्मविभूषण, एवं भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से भी विभूषित किया गया है। इनकी मृत्यु 24 मार्च, 2011 को हुई।

Scanned with CamScanner

3.

→ विदुषी एम एस सुब्बुलक्ष्मी

कर्नाटक संगीत की जिस कलाकार ने उत्तर भारत में सर्वाधिक लोकप्रियता अर्जित की है उसका नाम है, एम एस सुब्बुलक्ष्मी। उन्हें दक्षिणावासी एम एस कहकर पुकारते हैं और तमिलवासियों ने उन्हें 'कोकिल गानम' जैसा सार्थक नाम दिया है

→ जन्म :→ एम एस सुब्बुलक्ष्मी का जन्म वर्ष 1916 को

मीनाक्षी देवी की पुण्यस्थली मदुरै में हुआ। उनकी माता का नाम 'षण्मुखवडिक' था, जो अपने समय की विख्यात वादिका थी। बचपन में कुजम्मा नाम से जानी जाती एम एस को उनकी माता से संगीत शिक्षा मिली। बाद में उन्हें प्रसिद्ध कलाकार एम श्री निवास अय्यंगार व बाला सुब्रह्मण्यम की नानी धन्नमाला से सीखने का अवसर मिला।

उन्होंने प्रसिद्ध गायिका सिद्धेश्वरी देवी से ठुमरी तथा दिलीप चन्द्र बेदी से भी हिन्दुस्तानी संगीत की बारीकियों को सीखा।

→ कृतित्व :→ सुब्बुलक्ष्मी की शादी वर्ष 1940 में प्रसिद्ध

खादी प्रचारक एवं पत्रकार टी सदाशिवम से हुई। उन्होंने हीरे की पारखी की तरह एम एस की विलक्षण प्रतिभा को पहचाना और उन्हें आगे बढ़ने में पूरा सहयोग दिया वैसे एम एस ने बीस वर्ष की आयु से ही सार्वजनिक कार्यक्रम देने प्रारम्भ कर दिए थे।

उनकी ख्याति का एक उदाहरण यह है कि मद्रास संगीत विद्वत सभा की स्थापना के 42 वर्ष में प्रथम बार किसी महिला को अर्थात एम एस सुब्बुलक्ष्मी को अध्यक्ष बनाया गया।

Scanned with CamScanner

उस समय दक्षिण में महिला गायकों को उतना आदर नहीं था। अतः एम एस को यह सम्मान मिलना एक असाधारण उपलब्धि थी।

एम एस के मधुर कण्ठ व मनोहारी प्रस्तुतीकरण के कारण उनका नाम जन-जन की वाणी पर है। उत्तर भारत में उनकी लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि उन्होनें ब्रज व राजस्थानी में रचे भक्त शिरोमणि मीराबाई के भजनों को सफलतापूर्वक गाया है।

सर्वप्रथम उन्होने अपने पति द्वारा निर्मित फिल्म मीरा में भाव विभोर होकर 'मीरा' का अभिनय भी किया एवं उसके पद भी गाए, जो उन दिनों बहुत पसन्द किए गए। बाद में अनेक अवसरों पर उन्होनें सार्वजनिक मंचों पर मीरा के पद गाए हैं। वस्तुतः उत्तर भारत को उनका परिचय कराने का श्रेय भारत कोकिला सरोजिनी नायडू को जाता है। एम एस ने कन्नड़, तमिल, तेलगू, हिन्दी, संस्कृत व बंगाली भाषा में गीत गाए हैं।

एम एस एक भावुक व संवेदनशील कलाकार हैं इसलिए उनके गाने में असर है तासीर है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार उनका गायन सुनकर कहा था, आप स्वर साम्राज्ञी हैं, मैं निरा प्रधानमंत्री, मैं आपके सामने क्या हूँ। एम एस ने महत्त्वपूर्ण अवसरों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।

वर्ष 1963 में उन्होनें एडिनबरो विश्व संगीत समारोह में पहली बार भारत का प्रतिनिधित्व किया था। एवं वर्ष 1967 में चालीस दिन तक अमेरिका में रहकर कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उनको यह सम्मान प्राप्त है कि राष्ट्र संघ के सभाभवन में विश्व राष्ट्रों के प्रतिनिधियों के समक्ष अपना गायन प्रस्तुत किया, जिसमें एक संस्कृत गीत व एक राजाजी कृत अंग्रेजी गीत था।

Scanned with CamScanner

आजकल बड़े-बड़े कलाकार बड़ी रकम लेकर देश विदेश में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं एवं साधारणतया कोई कार्यक्रम अपने नि:शुल्क नहीं देते, जबकि सुब्बुलक्ष्मी ने अपने हितकारी व जन-कल्याणकारी संस्थाओं के लाभार्थ बिना पारिश्रमिक लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किए, उनमें गांधी स्मारक निधि कस्तूरबा स्मारक निधि, रामकृष्ण मिशन व अस्पताल निर्माण निधि कोष में उनके कारण पचास लाख तक की राशि जन कल्याण के काम में लगी।

उन्होंने तंजावूर मे स्थि त्रिमूर्ति साधना भूमि को राष्ट्रीय निधि के रूप में बदलने का बीड़ा उठाया था। एम एस को कई विश्वविद्यालयों द्वारा सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय प्रमुख है। सही अर्थ में उन्हें जो पुरस्कार प्राप्त है वह यह है कि उनका गाया भगवान वेंकटेश की स्तुति में रचित श्री वेंकटेश सुप्रभात का रिकॉर्ड दक्षिण भारत के लगभग हर घर में रोजाना बजाता है।

→ सम्मान :→ ये प्रथम महिला गायिका है, जिन्हें म्यूजिक अकादमी मद्रास द्वारा संगीत कला निधि की उपाधि प्रदान की गई। तत्पश्चात् रैमन मैगसेसे अवार्ड संगीत नाटक अकादमी अवार्ड, पद्मभूषण एवं पद्मविभूषण तथा संगीत नाटक अकादमी के आजीवन रत्न सदस्यता प्राप्त एम् एस सुब्बुलक्ष्मी को भारत सरकार ने देश का सर्वोच्च पुरस्कार 'भारतरत्न' से भी विभूषित किया है।

Scanned with CamScanner

4.

→ USTAD VILAYAT KHAN

→ जन्म :- महान सितार नवाज उस्ताद विलायत खाँ

का जन्म २० अगस्त, १९२७ को महान गौरीपुर पूर्व बंगाल में हुआ था, वह जन्माष्टमी की रात थी। इनके पिता प्रसिद्ध सितारवादक उस्ताद इनायत खाँ पितामह उस्ताद इमदाद खाँ एवं प्रपितामह उस्ताद साहबदाद जैसे महान संगीतज्ञों के परिवार से थे। दो वर्ष तक गौरीपुर में रहने के बाद पिताश्री के साथ विलायत खाँ कलकत्ता आ गए। जहाँ ये दस वर्ष की आयु तक रहे और अपने पिताश्री से तालीम लेते रहे। छोटी उम्र में ही प्रयाग संगीत सम्मेलन में अपनी कला का सफल प्रदर्शन कर अपनी प्रतिभा से जनता को प्रभावित कर दिया। पिताश्री उस्ताद इनायत खाँ के वर्ष 1938 में देहान्त हो जाने के बाद वे अपनी माताजी के साथ कलकत्ता से दिल्ली आ गए। उनकी माताजी कुशल गायिका रही। अतः वे अपने पुत्र को दिन में दस-बारह घण्टे रियाज कराती रही। यही विलायत खाँ ने अपने नाना बन्दे हसन खाँ से वर्ष 1938-42 तक गायकी की तालीम ली और सुरबहार की शिक्षा भी ग्रहण की। इसके बाद विलायत ने अपने चाचा उस्ताद वहीद खाँ से भी तालीम पाई।

आगरा घराने के प्रसिद्ध गायक उस्ताद फैयाज खाँ ने विलायत खाँ को बहुत से ख्याल के स्थायी अन्तरे सिखाए। वे सितार तथा गायन का अभ्यास बड़ी लगन से करते थे। फलतः गायन की सभी चीज़ो का समावेश इन्होंने अपने सितार वादन में किया। इसके इलावा ये रामपुर के उस्ताद मुश्ताक हुसैन, इन्दौर के उस्ताद अमीर खाँ तथा अपने बड़े भाई समान ध्रुवतारा जोशी से समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे। स्कूल में इन्होंने दो साल पढ़ाई की, लेकिन बाद में

Scanned with CamScanner

घर पर हिन्दी, उर्दू, फारसी, बंगाला, अरबी और अंग्रेज़ी का ज्ञान अर्जित किया।

विलायत खाँ साहब का कहना है कि गत छः पीढ़ियों से हमारे खानदान में संगीत विद्या चली आ रही है। हमारे पूर्वजों के प्रपितामह श्रीमान सुरजन सिंह से उसका आरम्भ हुआ, वे राजपूत थे।

→ कृतित्व :→ वर्ष 1944 में कांग्रेस की ओर से बम्बई में एक संगीत सम्मेलन का आयोजन हुआ था। उसमें भाग लेने के लिए विलायत खाँ भी निमन्त्रित किए गए साथ-ही-साथ सम्मेलन में उस्ताद फैयाज खाँ, बड़े गुलाम अली खाँ, उस्ताद अहमद जान थिरकवा, बुन्दू खाँ, अल्लादियाँ खाँ आदि चोटी के कलाकार भी सम्मिलित हुए थे। इस सम्मेलन में विलायत खाँ ने अपने सुमधुर सितार वादन से श्रोताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। जनता के आग्रह से तालियों की गड़गड़ाहट के बीच पाँच बार इनको मंच पर सितार वादन के लिए आना पड़ा। इस वादन के साथ ही खाँ साहब चमक गए और कई सम्मेलनों में भाग लेने के निमन्त्रण आने लगे।

उस्ताद विलायत खाँ ने ही ख्याल और ठुमरी अंग की रचनाओं को पहली बार पूरी मार्मिकता भाव प्रवीणता और अपने मन के साथ सितार पर अवतरित किया। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि गायकी अंग की बन्दिशों को जब उन्होंने सितार पर उतारा, तो कुछ इस अन्दाज़ में कि किसी को यह अहसास न हुआ कि यह गायक अंग की चीज़ है, जिसे तन्त्र वाद्य पर बजाया जा रहा है, इसलिए इनकी वादन शैली गायकी से बहुत कुछ प्रभावित है। इनकी सपाट तानें, जो सितार पर मुश्किल है बहुत ~~स्प~~ स्पष्ट और तैयार निकालती है। गायकी

Scanned with CamScanner

अंग से ही ये आलाप जोड़गत तोड़ और झाला बजाते है। ठुमरी वादन मे तो ये स्वयं गाने भी लगते है और छोटे-छोटे टुकड़ों को गाने के बाद उसे सितार पर बजाते है। इस प्रकार श्रोताओं को गाने का भी आनन्द मिलने लगता है।

सितार एक ऐसा वाद्य है, जिस पर स्वर की गूँज नही होती अर्थात् मिजराब पर आघात लगाते ही उसकी ध्वनि तुरन्त बन्द हो जाती है। सितार वादन में इस कमी को पूरा करने के लिए इन्होने मींड का प्रयोग शुरू किया, इन्होंने एक पर्दे पर पाँच स्वर भी मींडो का प्रयोग शुरू किया। केवल मींड का प्रयोग ही नही किया बल्कि उस मींड को गले की खटके, मुर्की के साथ प्रयुक्त किया, जिससे इनका वादन अत्यधिक आकर्षक हो गया, लेकिन ऐसा करना बड़ा कठिन साध्य था। इन्होंने गमक को सितार पर बजाना शुरू किया। गमक इनके सितार वादन की विशेषता है, जब कार्यक्रम मे दरबारी कान्हाड़ा राग में गमक बजाना प्रारम्भ करते है, तो हॉल गूज उठता है। सपाट तान ये सितार पर बड़ी आसानी से प्रस्तुत करते है। मन्द्र, मध्य, तार तथा अति तार सप्तक में ये एक तान को बजा लेते है, जो सितार पर मुश्किल तथा कठिन साध्य है। इनकी तान बहुत स्पष्ट और तैयार निकलती है। इनकी द्रुतलय में भी एक-एक स्वर सुनाई देता है सितार बजाते-बजाते इनको अपनी भी सुध नही रहती। सितार को गायन की तरह ही सुरीला बनाने की दिशा में विलायत खाँ का विशेष योगदान है। विभिन्न लयकारियों की लय बजाने में इनको विशेष रुचि नही रहती।

तबले के साथ लड़न्त में इनकी विशेष रुचि नहीं है, उन्हें सीधा ठेका ही अधिक पसन्द है। यमन, दरबारी, बागेश्री, मियाँ

मल्हार, खमाज, देश, आदि रागों का वादन करने में ये प्रसिद्ध है। इनके सितार के तार मिलाने की विधि में अन्य सितारों से थोड़ी भिन्नता है।

→ सम्मान :- विलायत खाँ साहब ने देश के विभिन्न अंचलों और इंग्लैण्ड अमेरीका, कनाडा, अफ्रीका, हॉलैण्ड, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, रूस आदि देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर भारतीय संगीत को गौरवान्वित किया है। फिल्मों में भी कला का प्रदर्शन कर भारतीय संगीत को गौरवान्वित किया है। इन्होंने 'मल्हार' 'महादेश' 'मुन्ना' एवं घर आना जलसाघर और कादम्बरी आदि फिल्मों में संगीत निर्देशन दिया है, जो अपने समय में काफी विख्यात हुआ।

अपनी शर्तों पर काम करने की शर्त के कारण ही विलायत खाँ ने एक बार रेडियो का बहिष्कार कर दिया था तथा पद्मश्री, पद्मभूषण जैसे अलंकारों को भी स्वीकार नहीं किया, लेकिन सरकारी सम्मानों को ठुकराने वाले खाँ साहब ने कुछ सम्मानों को भी स्वीकारा था, जिनमें तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद द्वारा प्रदत्त आफताब - ए - सितार और आर्टिस्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा प्रदान की गई 'सितार सम्राट' की उपाधि प्रमुख है। निरभिमान प्रकृति के विलायत खां को बाहरी आडम्बर बिल्कुल पसन्द नहीं था।

आकाशवाणी व दूरदर्शन पर संगीत प्रस्तुती की बात उठाए जाने पर उस्ताद विलायत खाँ ने कहा कि मैं रेडियो पर नहीं बजाता, क्योंकि मुझे लगता है कि अधिकारियों ने घोड़े और गधे को एक ही श्रेणी में रख दिया है और फिर यह निर्णय करने वाले वे कौन है कि क्या दोनों एक

Scanned with CamScanner

ही स्तर के हैं। वर्ष 1952-53 से मैं रेडियोस्टेशन नहीं गया तथा अन्य कई कलाकारों ने भी उस समय रेडियो जाना बन्द कर दिया। मैं भारत का सबसे ऊँची फीस पाने वाला कलाकार हूँ। यह मैंने दिखा दिया है। मैं जानता हूँ कि मुझे क्या देना है और लेना है। यह घमण्ड की बात नहीं है।

इसी तरह इन्होंने 'संगीत नाटक अकादमी' द्वारा दिए गए पुरस्कार को भी अस्वीकार कर दिया। इसका कारण इन्होंने यह बताया कि "एक तो मुझे यह पुरस्कार पहले ही मिलना चाहिए था और दूसरे बहुत से ऐसे कलाकार बाकी बचे हुए हैं, जिन्हें मुझसे पहले पुरस्कार मिलना चाहिए था।"

एक बार जब ये एडिनबरा से लौटे तो इनके समक्ष प्रेस सम्मेलन बुलाने तथा विदेश के अपने अनुभव को बताने का प्रयास किया गया। इन्होंने उस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा कि व्यर्थ ही रुपया खर्च करने से तो कहीं अधिक अच्छा यह है कि उस पैसे को गरीबों में बाँट दिया जाए।

सितार बजाते समय अपने अनुभव के बारे में खाँ साहब कहते हैं कि विविध रागों एवं स्वरों द्वारा रस-निष्पत्ति होती है। बजाते समय कलाकार उसी रस में डूब जाता है। सितार वादन के समय रस सृष्टि ही मुझे आनन्द का अनुभव कराती है रही पसन्दगी की बात मेरे 'मूड' पर निर्भर है। चिन्तामग्न रहने पर आलाप करना अच्छा लगता है। खुश होने पर गत तोड़े एवं लयकारी में मुझे आनन्द आता है और अधिक खुश होने पर तेज गति से झाला करने में मुझे मजा आता है।

→ शिष्य परम्परा :→ विलायत खाँ साहब ने कई

शिष्य तैयार किए हैं, जिनके प्रमुख नाम हैं :→ अरविन्द पारिख, कल्याणी राय, भीमसेन शर्मा, काशीनाथ मुखर्जी, बेंजामिन गोपस, रईस खाँ तथा श्रीमती बिन्दु झवेरी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

→ मृत्यु :→ 13 मार्च 2004 को भारतीय संगीत की यह विभूति पंचत्वों में विलीन हो गए।

6.

→ Pandit Hari Parsad Chaursia :-

→ जन्म :- अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बाँसुरी वादक

पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया ने स्वस्थ तालीम और निष्ठापूर्ण साधना के बल पर देश के प्रथम श्रेणी के कलाकारों में स्थान बना लिया है। 1 जुलाई 1938 को इलाहबाद में जन्में पण्डित चौरसिया भारतीय शास्त्रीय संगीत के विश्व भर में प्रचार के लिए विख्यात हैं। आज देश के विभिन्न अंचलों में शायद ही कोई संगीत सम्मेलन होता है, जहाँ बाँसुरी के इस जादूगर का ध्वनि सौन्दर्य न गूँजता हो संगीत परिवार के न होते हुए भी पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया ने संगीत का मार्ग चुना और सभी प्रकार की बाधाओं के साहस के साथ पार करते हुए अपने कठोर श्रम, साहस धैर्य भक्ति एवं निष्ठा के साथ अपना पथ बनाया। हरिप्रसाद के पिता का नाम श्री छेदीलाल चौरसिया था। इनकी माता का इनके बचपन में ही देहान्त हो जाने के कारण पिता ने ही इनका पालन-पोषण किया।

→ शिक्षा :- 15 वर्ष की आयु में उन्होंने पण्डित राजाराम से

गाना सीखना आरम्भ किया, किन्तु वाराणसी के विख्यात बाँसुरी वादक पण्डित भोलानाथ को सुन लेने पर एक वर्ष में ही बाँसुरी वादन की ओर वे प्रवृत्त हुए, उन्होंने पण्डित भोलानाथ से आठ वर्ष तक बाँसुरी वादन की तालीम पाई। वर्ष 1957 में यानि 19 वर्ष की आयु में हरिप्रसाद उड़ीसा में आकाशवाणी कटक के स्टाफ आर्टिस्ट बन गए। वर्ष 1962 में उनका तबादला बम्बई हो गया, जहाँ उन्होंने सुरबहार वादिका विदुषी श्रीमती अन्नपूर्णा देवी से तालीम प्रारम्भ की। इस अविरम प्रशिक्षण और पथ-प्रदर्शन से उनके संगीत में अधिक गम्भीरता और व्यापकता आ गई एवं स्वतन्त्र कलाकार बनने के लिए उन्होंने आकाशवाणी

Scanned with CamScanner

की नौकरी छोड़ दी।

→ व्यक्तित्व :→ पण्डित चौरसिया के बाँसुरी वादन की सबसे बड़ी सम्पदा है, फूँक की बुलन्दी एवं माधुर्य और स्वर-क्षेपण का बल। इसके अलावा नवसृजन की उनकी क्षमता कई बार रसिकों को चमत्कृत भी कर देती है। सम्म एवं चिन्तन का जैसा परिपुष्ट आधार उनके वादन में झलकता है, वह विशेष उल्लेखनीय है। पण्डित चौरसिया स्वभाव व प्रशिक्षण से शास्त्रीय ही नहीं बल्कि आधुनिक दृष्टिकोण के भी धनी हैं, जिसके आधार पर वे नए विचारों को स्वीकार करते हैं। फिल्म जगत् में उनका योगदान इसका उदाहरण है।

पण्डित चौरसिया अमेरिका और यूरोप की नियमित यात्राएँ करते हैं और विश्वभर के संगीत समारोहों में वे बाँसुरी वादन के लिए आमन्त्रित किए जाते हैं। पण्डित चौरसिया एक और परम्परावादी हैं और दूसरी ओर नवसर्जक भी। उन्होंने अपनी फूँक तकनीक से भारतीय शास्त्रीय संगीत की अभिव्यंजक सम्भावनाओं को विस्तृत बनाया।

शास्त्रीय संगीत के अलावा उन्होंने भारतीय लोक संगीत पॉप संगीत और पश्चिमी संगीत तक अपने वादन का क्षेत्र विस्तार सफलता पूर्वक किया है। उन्होंने कई भारतीय फिल्मों के लिए संगीत तैयार किया। प्रसिद्ध सन्तूर वादक पण्डित शिवकुमार शर्मा के साथ मिलकर 'शिवहरी' नाम से दिए गए 'सिलसिला' फिल्म के संगीत की 'प्लैटिनम' डिस्क बनी। उनके संगीत निर्देशन में बनी अन्य फिल्में हैं चाँदनी, लम्हें, डर, परम्परा, फाँसले और साहिबान। उनका प्रयोगिक एलबम इटर्निटी का भी प्लैटिनम डिस्क बना, जिसमें भारतीय शास्त्रीय रागों के साथ पश्चिमी तत्वों का भी समावेश किया गया है और पश्चिमी संगीत, पश्चिमी तत्वों का भी समावेश किया गया है।

भारतीय और पश्चिमी संगीत के समन्वय के कई रिकार्ड पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया ने बनाए हैं। उन्होंने जॉज कलाकार जान मैक्सलिन और जॉन गारबेरक के साथ ओस्लो में कामपैक्ट डिस्क तैयार किया, जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुआ। उन्होंने पण्डित जसराज विदुषी किशोरी आमनकर पण्डित शिवकुमार शर्मा, उस्ताद जाकिर हुसैन, डॉ. बाल मुरली कृष्ण, जान मैक्सलीन जान मैक्सलिन जान गारबेरक जेरी कारयेल एनबर्ट गिसमांटी आदि के साथ भी युगलबन्दी पेश की, उन्होंने पश्चिमी वाद्कों के साथ ऑर्केस्ट्रा का संचालन किया।

→ सम्मान :→ पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया को संगीत के महत्त्वपूर्ण योगदानों को देखते हुए, इन्हें कई पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है, वे इस प्रकार हैं
संगीत नाटक अकादमी अवार्ड (1984), महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार (1990), पद्मभूषण अलंकरण (1992), कोणार्क सम्मान (1992), यशभारती सम्मान (1994 कालिदास सम्मान (1999), पद्मविभूषण अलंकरण (2002) एवं उस्ताद हाफिज अली खाँ अवार्ड (2000)।

सम्प्रति संगीत की समृद्धि और उदात्त परम्परा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से देश-विदेश में शिष्य तैयार कर रहे हैं। वे रोटर्डम म्यूजिक 'कंजर्वेटोरियम' में जहाँ, के भारतीय संगीत विभाग के वे कला निर्देशक हैं, संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं,

→ Pandit Samta Prasad :-

→ **जन्म :→** विश्व विख्यात तबला वादक पण्डित सामता मिश्र का जन्म 19 जुलाई, 1920 को वाराणसी के कबीर चौरा नामक मुहल्ले में व्यावसायिक संगीतज्ञों के परिवार में हुआ। गुदई महाराज के नाम से ख्याति प्राप्त पण्डित सामता प्रसाद ने अपनी वादन शैली को एक नया रंग-रूप देने का सफल प्रयास किया। इनके पिता पण्डित बाचा मिश्र एक अच्छे कलाकार थे। गुदई महाराज जब केवल नौ वर्ष के थे तभी उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। इनकी आगे की शिक्षा तबले के प्रकाण्ड विद्वान विक्रमादित्य मिश्र उर्फ बिक्कू जी से हुई।

सामता प्रसाद ने अथक एवं घनघोर अभ्यास करके अपने हाथ में ऐसी चमक पैदा कर ली कि जहाँ-जहाँ भी उनका वादन हुआ, ये रसिक श्रोताओं के हृदय में बसते चले गए। वर्ष 1942 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोज अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में इनको पहली बार महत्त्वपूर्ण अवसर मिला। उसके बाद तो विश्व के कोने-कोने से इनको कार्यक्रम के निमन्त्रण मिलने लगे और तबले के इस जादूगर ने पाँच दशक तक संगीत जगत में राज किया। देश का शायद ही कोई चोटी का कलाकार हो, जिसके साथ इन्होंने वादन न किया हो।

कृतित्व :→ कई फिल्मों के माध्यम से तबला वादन में ख्याति अर्जित करने वाले गुदई महाराज ने 'झनक-झनक पायल बाजे' में गोपीकृष्ण के नृत्य के साथ उनका निखरा हुआ तबला वादन अपनी अलग ऊँचाई लिए हुए है। फिल्म 'मेरी सूरत तेरी आँखें' में गीत 'नाचे मन मोरा मगन तिग्धा' धीगा धीगा में तिग्धा धी की, की

संगत और थी तथा गी की बाएँ की गुफ्तगूँ की नजाकत उन्होंने ही पेश की थी। किनारा के गीत 'मीठे बोल बोले रे कोयलिया' में अद्धा ठेके में तिरकिट धिरकिट के रेले का जो अल्प समय में इन्होंने स्वरूप कायम किया है, गुदई महाराज के ही अँगुलियों का चमत्कार है।

कुदरत में परवीन सुल्ताना के साथ हमें तुमसे प्यार कितना में दाएँ और बाएँ का जो प्यार और लड़खड़ाव उन्होंने लग्गी-लड़ी के माध्यम से प्रस्तुत कर गीत में चार चाँद लगा दिए। शोले के ताँगे की आवाज के लिए आरडी बर्मन के अनुरोध पर उनका तबला वादन तिरकिट, धिरकिट और खटक घोड़े और तांगे के साथ इस प्रकार एकाकार हो गया कि लोगों को समझ में बहुत बाद में आया कि अरे यह तो तबला बज रहा है, बसन्त बहार, झनक-झनक पायल बाजे, तेरी सूरत मेरी आँखें, जलसघार असमाप्त कविता, फिल्म शोले और नवाब वाजिद अली शाह जैसी अनेक अन्य मार्ते में भी वादन करके उन्होंने अपने तबले की अलग छाप छोड़ी है।

→ सम्मान :→ कई मान-सम्मान एवं उपाधियों से विभूषित

पण्डित गुदई महाराज को तबला का जादूगर, ताल मार्तण्ड, ताल शिरोमणि तबला सम्राट, ताल विलास, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, हाफिज अली खाँ सम्मान और वर्ष 1972 तथा 1992 में पद्मश्री और पद्मभूषण जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया गया। इनके अनेक शिष्यों में इनके दो पुत्र श्री कुमारलाल मिश्र एवं श्री कैलाशनाथ मिश्र कुशल तबलावादक हैं। कर्मयोगी पण्डित सामता प्रसाद 31 मई, 1994 को एक तबला कार्यशाला में भाग लेने पुणे पहुँचे वहीं दिल का दौरा पड़ा और वह 31 मई, 1994 को चिर निन्द्रा में विलीन हो गए।

Scanned with CamScanner